सुविचार– अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

टोपीवाला और बंदर

बहुत समय पहले एक छोटे से गांव में रामू नाम का एक मेहनती टोपीवाला रहता था. रामू के पास तरह-तरह की रंगीन टोपियां थीं. कोई टोपी लाल थी, कोई पीली, कोई

हरी तो कोई नीली. वह इन टोपियों को अपनी बड़ी टोकरी में रखता और रोज सुबह उन्हें बेचने के लिए आसपास के गांवों की ओर निकल जाता.

रामू बहुत खुशमिजाज था. रास्ते में मिलने वाले बच्चों को वह मुस्कुराकर टोपियां दिखाता. बच्चे भी उसकी रंग-बिरंगी टोपियां देखकर बहुत खुश होते. एक दिन गर्मी बहुत ज्यादा थी. रामू सुबह से लगातार चलता जा रहा था. दोपहर होते-होते वह काफी थक गया. तभी उसे सड़क के किनारे एक बड़ा और घना पेड़ दिखाई दिया. पेड़ के नीचे ठंडी छांव थी. रामू ने सोचा, 'थोड़ी देर आराम कर लेता हूं. फिर आगे जाकर टोपियां बेचूंगा. उसने टोपियों से भरी टोकरी पेड़ के नीचे रखी और वहीं लेट गया. कुछ ही देर में उसे गहरी नींद आ गई.लेकिन रामू को नहीं पता था कि जिस पेड़ के नीचे वह सो रहा है, उसी पेड़ पर बंदरों का एक बड़ा परिवार रहता है. बंदर बहुत शरारती थे. उन्होंने नीचे रखी टोकरी देखी तो उनकी आंखों में चमक आ गई. एक बंदर धीरे-धीरे पेड़ से नीचे उतरा. उसने टोकरी में हाथ डाला और एक टोपी निकाल ली. फिर दूसरा बंदर आया और उसने भी एक टोपी उठा ली. देखते ही देखते सभी बंदर टोपियां लेकर पेड़ पर चढ़ गए. कुछ देर बाद रामू की नींद खुली. उसने टोकरी उठाने के लिए हाथ बढ़ाया तो वह देखकर चौंक गया कि टोकरी बिल्कुल खाली थी. अरे! मेरी सारी टोपियां कहां गईं. रामू घबराकर इधर-उधर देखने लगा. तभी उसे ऊपर से आवाज सुनाई दी 'खी-खी-खी!'. रामू ने ऊपर देखा तो उसकी आंखें खुली की खुली रह गईं. पेड़ की हर डाल पर एक बंदर बैठा था और हर बंदर के सिर पर रामू की एक टोपी थी.

रामू ने हाथ जोड़कर कहा, 'भाइयों, मेरी टोपियां वापस कर दो. इन्हीं को बेचकर मैं अपना घर चलाता हूं. लेकिन बंदरों ने उसकी बात नहीं मानी. वे रामू को देखकर उसकी नकल करने लगे. रामू ने हाथ ऊपर उठाया तो बंदरों ने भी हाथ ऊपर उठा दिए. उसने सिर हिलाया तो बंदरों ने भी सिर हिलाया. रामू समझ गया कि बंदर उसकी हर हरकत की नकल करते हैं. उसने कुछ देर सोचा. वह जानता था कि गुस्सा करने से समस्या हल नहीं होगी. इसलिए उसने चुपचाप अपनी एक टोपी सिर से उतारी और जमीन पर फेंक दी. बंदरों ने देखा कि रामू ने टोपी फेंक दी है. उन्होंने भी उसकी नकल की. एक बंदर ने अपनी टोपी उतारकर नीचे फेंक दी. फिर दूसरे बंदर ने भी टोपी फेंक दी. देखते ही देखते सभी बंदरों ने अपनी-अपनी टोपियां नीचे फेंक दीं. रामू ने तुरंत सारी टोपियां इकट्ठी कर लीं और उन्हें अपनी टोकरी में रख लिया. उसने ऊपर देखकर मुस्कुराते हुए कहा, 'धन्यवाद, बंदर भाइयों! बंदर पेड़ पर बैठकर उसे देखते रहे. शायद वे समझ ही नहीं पाए कि रामू ने उन्हें उनकी ही नकल करने की आदत से हरा दिया. रामू अपनी टोकरी सिर पर रखकर आगे चल पड़ा. रास्ते में वह सोच रहा था कि अगर वह गुस्से में बंदरों को डराने या पत्थर मारने की कोशिश करता तो शायद उसकी टोपियां वापस नहीं मिलतीं. लेकिन उसने शांत रहकर उनकी आदत को समझा और उसी का इस्तेमाल किया. उस दिन रामू ने एक बहुत बड़ी सीख सीखी—मुश्किल समय में घबराने या गुस्सा करने के बजाय शांत दिमाग से सोचने वाला व्यक्ति रास्ता जरूर खोज लेता है.

सीख
मुसीबत कितनी भी बड़ी हो, हमें घबराना नहीं चाहिए. धैर्य, समझदारी और सही समय पर सही तरकीब से बड़ी से बड़ी परेशानी का हल निकाला जा सकता है.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

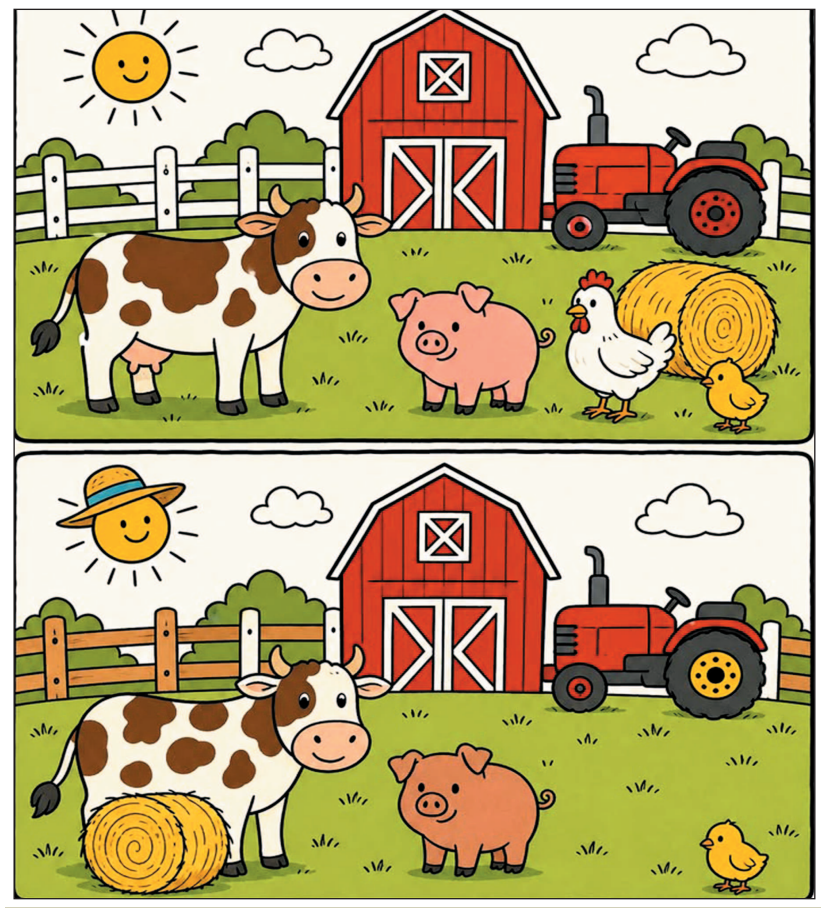

उत्तर- 1. सूरज में अंतर, 2. घर के पास लगी रेलिंग का कलर, 3. ट्रैक्टर का पहिया, 4. मुर्गी गायब, 5. गाय के पास की भूरी की गठरी

भूल भुलैया

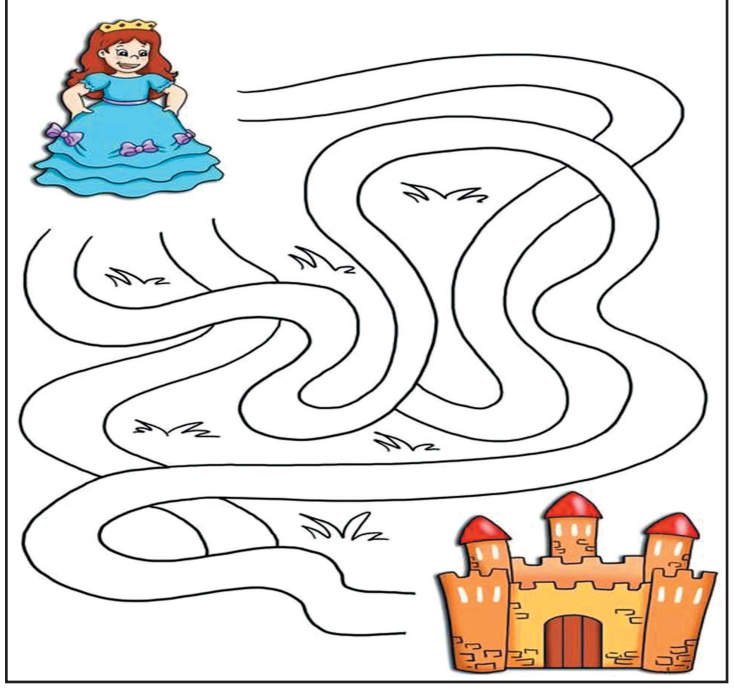

बूझो तो जानें

- ऐसी कौन-सी चीज है जिसके चार पैर हैं, लेकिन वह चल नहीं सकती
  उत्तर- मेज
- मैं गोल-गोल घूमता हूं, अपनी जगह से हिलता नहीं. मैं कौन हूं
  उत्तर- घड़ी
- ऐसी कौन-सी चीज है जिसे जितना खींचो, उतनी ही छोटी होती जाती है
  उत्तर- पेंसिल
- मैं पानी पीता हूं, लेकिन पानी में रहता नहीं. मैं कौन हूं
  उत्तर- पौधा
- मेरे दांत बहुत हैं, लेकिन मैं खाना नहीं खा सकता. मैं कौन हूं
  उत्तर- कंघी
- मैं आसमान में उड़ता हूं, मेरे पंख नहीं हैं. मैं कौन हूं
  उत्तर- बादल
- मैं खुद गीला होता हूं, लेकिन दूसरों को सुखाता हूं. मैं कौन हूं
  उत्तर- तौलिया
- मैं दिनभर आपके साथ रहता हूं, लेकिन अंधेरा होते ही गायब हो जाता हूं. मैं कौन हूं
  उत्तर- परछाई
- ऐसी कौन-सी चीज है जिसे हम लिखते हैं, लेकिन पढ़ नहीं सकते
  उत्तर- अपना हस्ताक्षर
- ऐसी कौन-सी चीज़ है जो पानी पीते ही मर जाती है?
  उत्तर- आग
- वह क्या है जो जितना बढ़ता है उतना ही कम दिखाई देता है?
  उत्तर- अंधेरा
- जितना निकालते जाओ, उतना ही बड़ा होता जाए?
  उत्तर- गड्ढा

जानकारी

बांस खाने वाला जानवर : पांडा

पांडा दुनिया के सबसे पसंद किए जाने वाले वन्यजीवों में से एक है. इसका गोल-मटोल शरीर, काले कान, सफेद चेहरा और आंखों के आसपास काले निशान इसे बेहद अनोखा बनाते हैं. बच्चों को पांडा खासतौर पर इसलिए पसंद आता है क्योंकि वह देखने में किसी बड़े खिलौने जैसा लगता है. लेकिन पांडा सिर्फ प्यारा ही नहीं, बल्कि इसकी जिंदगी और आदतें भी काफी दिलचस्प हैं.

पांडा भालू परिवार का सदस्य है. इसे विशाल पांडा भी कहा जाता है. यह मुख्य रूप से चीन के पहाड़ी और बांस वाले जंगलों में पाया जाता है. पांडा के लिए बांस भोजन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है. हालांकि बांस में ऊर्जा और पोषण अपेक्षाकृत कम होता है, फिर भी पांडा बड़ी मात्रा में बांस खाकर अपनी जरूरत पूरी करता है. एक पांडा दिन का बड़ा हिस्सा भोजन करने में बिताता है. वह बांस की पत्तियां, तने और कोमल हिस्से खाता है. उसके मजबूत दांत और जबड़े बांस को चबाने के लिए अच्छी तरह अनुकूलित होते हैं. पांडा के पंजों में एक ऐसी विशेष संरचना भी होती है, जिसकी मदद से वह बांस की डंडियों को पकड़कर खा सकता है. पांडा आमतौर पर अकेला रहना पसंद करता है. वह अपना क्षेत्र बनाकर रहता है और दूसरे पांडा से मुख्य रूप से प्रजनन के समय संपर्क करता है. पांडा अच्छे पेड़ पर चढ़ने वाले जानवर भी हैं. खतरा महसूस होने पर वे पेड़ पर चढ़कर सुरक्षित स्थान तलाश सकते हैं. जन्म के समय पांडा का बच्चा बेहद छोटा होता है. उसका वजन मां के वजन का बहुत छोटा हिस्सा होता है. जन्म के समय उसके शरीर पर बाल भी बहुत कम होते हैं और वह पूरी तरह अपनी मां पर निर्भर रहता है. धीरे-धीरे वह मजबूत होता है और कुछ महीनों में उसके शरीर का विशिष्ट काला-सफेद रंग स्पष्ट होने लगता है. पांडा की एक और खास बात उसका शांत स्वभाव है. वह अपना काफी समय भोजन करने, आराम करने और अपने आसपास घूमने में बिताता है.

विटामिन, खनिज और फाइबर से भरपूर : कटहल

गर्मियों के मौसम में बाजार में नजर आने वाला कटहल स्वाद और आकार दोनों के मामले में दूसरे फलों से काफी अलग है. बाहर से हरे रंग और कांटेदार सतह वाला यह फल अंदर से मीठी पीली कलियों से भरा होता है. कटहल की खासियत सिर्फ इसका स्वाद नहीं है, बल्कि इसका पेड़, फल, बीज और इसका इस्तेमाल भी इसे बेहद दिलचस्प बनाता है.

कटहल को पेड़ पर लगने वाले दुनिया के सबसे बड़े फलों में गिना जाता है. इसका एक फल कई किलोग्राम वजन का हो सकता है. कुछ बड़े कटहल इससे भी ज्यादा भारी हो सकते हैं. फल आमतौर पर पेड़ के तने या मोटी शाखाओं के पास उगता है, जो इसे देखने में और भी अनोखा बनाता है. कटहल की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसे कच्चा और पकने के बाद दोनों तरह से इस्तेमाल किया जाता है. कच्चे कटहल की सब्जी भारत के कई हिस्सों में लोकप्रिय है. मसालों के साथ पकाया गया कटहल स्वाद में बेहद लजीज लगता है. दूसरी ओर, पका हुआ कटहल मीठा होता है और इसकी पीली कलियां सीधे खाई जाती हैं. कटहल के बीजों को अक्सर लोग निकालकर फेंक देते हैं, लेकिन इन्हें भी भोजन में इस्तेमाल किया जा सकता है. बीजों को उबालकर या भूनकर खाया जाता है. कई जगह इनसे सब्जी भी बनाई जाती है. इनमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और कई खनिज तत्व पाए जाते हैं.

कविता

गुब्बारे वाला

गुब्बारे वाला आया रे,
रंग-बिरंगे लाया रे।
लाल, पीला,
नीला, हरा,
देखो गुब्बारा
कितना प्यारा

हवा में उड़ते
गोल-गोल,
बच्चों के मन में
मचती डोल।
पैसे देकर
गुब्बारा लिया,
खुश होकर सबने
खूब हँस दिया

हंसी-ठिठोली

- टीचर : बताओ, सबसे ज्यादा नींद कब आती है
  बच्चा : जब टीचर कहती हैं—आंखें बंद करके ध्यान लगाओ!
  मम्मी : बेटा, दूध क्यों नहीं पी रहे हो
  बच्चा : मम्मी, मैं बड़ा होकर चाय पीने वाला हूं, ट्रेनिंग अभी से कर रहा हूं
- पापा : परीक्षा में इतने कम नंबर क्यों आए
  बच्चा : पापा, नंबर तो बहुत अच्छे आए थे... बस बाकी बच्चों के ज्यादा आ गए
- टीचर : बताओ, आलस क्या होता है
  बच्चा : मैडम, इसका जवाब कल दूंगा... आज बहुत आलस आ रहा है
- मम्मी : बेटा, खाना खा लिया
  बच्चा : हां मम्मी
  मम्मी : क्या खाया
  बच्चा : प्लेट में जो था, वही.
- टीचर : तुम्हारी कॉपी इतनी साफ कैसे है
  बच्चा : मैडम, मैंने उसमें कुछ लिखा ही नहीं
- पापा : बेटा, तुम्हारा होमवर्क कहां है
  बच्चा : पापा, बहुत सुरक्षित जगह पर है
  पापा : कहां, बच्चा : मेरी यादों में
- दोस्त : तुम स्कूल में रोज देर से क्यों आते हो
  बच्चा : क्योंकि सुबह मेरी घड़ी भी मेरे साथ सोती है
- टीचर : अगर मैं तुम्हें दो आम दूं और फिर दो आम और दूं, तो तुम्हारे पास कितने आम होंगे
  बच्चा : पांच
  टीचर : पांच कैसे
  बच्चा : एक आम मेरे बैग में पहले से है

प्रेरक प्रसंग

हिम्मत की मिसाल बनीं लक्ष्मीबाई

बहुत समय पहले वाराणसी में एक नन्ही बच्ची रहती थी. उसका नाम मणिकर्णिका था और घर में सभी उसे प्यार से मनु कहते थे. मनु बाकी बच्चों से थोड़ी अलग थीं. उन्हें गुड़ियों से खेलने के साथ-साथ घुड़सवारी करना, दौड़ना और नई चीजें सीखना बहुत पसंद था. मनु के पिता उन्हें हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते थे. वह कहते थे, 'बेटी, जीवन में कभी डर के कारण पीछे मत हटना. जो सही हो, उसके लिए हमेशा खड़ी रहना. समय बीता और मनु बड़ी हुईं. उनका विवाह झांसी के राजा गंगाधर राव से हुआ. विवाह के बाद उनका नाम लक्ष्मीबाई पड़ा. वह झांसी की रानी बनीं और अपनी प्रजा से बहुत प्रेम करने लगीं. कुछ समय बाद राजा गंगाधर राव का निधन हो गया. रानी के सामने अचानक बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ गई. झांसी की सत्ता और भविष्य पर संकट मंडराने लगा. अंग्रेज झांसी पर अधिकार करना चाहते थे.

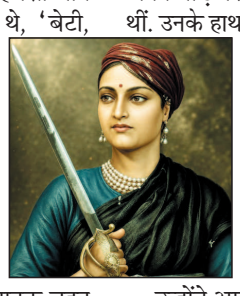

दरबार के कुछ लोगों ने रानी को सलाह दी कि वह अंग्रेजों के सामने झुक जाएं. लेकिन रानी लक्ष्मीबाई ने हार मानने से इनकार कर दिया. उन्होंने अपनी सेना को मजबूत किया और सैनिकों को युद्ध का प्रशिक्षण देने लगीं. वह खुद भी घुड़सवारी और युद्ध अभ्यास करती थीं. उनके साहस को देखकर झांसी के लोगों में भी आत्मविश्वास बढ़ने लगा. फिर 1857 का स्वतंत्रता संग्राम शुरू हुआ. झांसी भी संघर्ष की आग में आ गई. अंग्रेजी सेना ने झांसी पर हमला किया. रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी सेना के साथ बहादुरी से मुकाबला किया. कहा जाता है कि रानी अपने घोड़े पर सवार होकर युद्ध के मैदान में उतरती थीं. उनके हाथ में तलवार होती और चेहरे पर अद्भुत आत्मविश्वास दिखाई देता था. स्थिति कठिन होती जा रही थी, लेकिन रानी ने अपने सैनिकों का हौसला बढ़ाते हुए कहा कि हमें आखिरी सांस तक अपनी मातृभूमि की रक्षा करनी है. झांसी से निकलने की परिस्थिति आने पर भी रानी ने हिम्मत नहीं छोड़ी.

उन्होंने अपने घोड़े पर सवार होकर कठिन रास्ता पार किया और संघर्ष जारी रखा. आखिरकार 1858 में ग्वालियर के पास युद्ध करते हुए रानी लक्ष्मीबाई वीरगति को प्राप्त हुईं. वह बहुत कम उम्र में दुनिया से चली गईं, लेकिन उनकी बहादुरी की कहानी हमेशा के लिए इतिहास में अमर हो गई. रानी लक्ष्मीबाई का जीवन हमें सिखाता है कि साहस का मतलब डर का न होना नहीं है. असली साहस तो तब होता है, जब डर और मुश्किलों के बावजूद हम सही रास्ते पर आगे बढ़ते रहें.

बिंदु मिलाओ

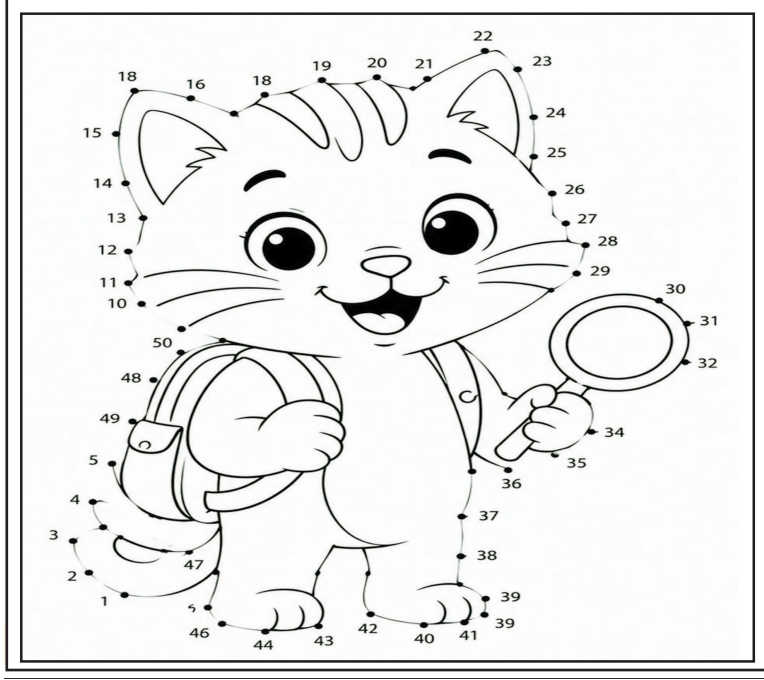

रंग भरो

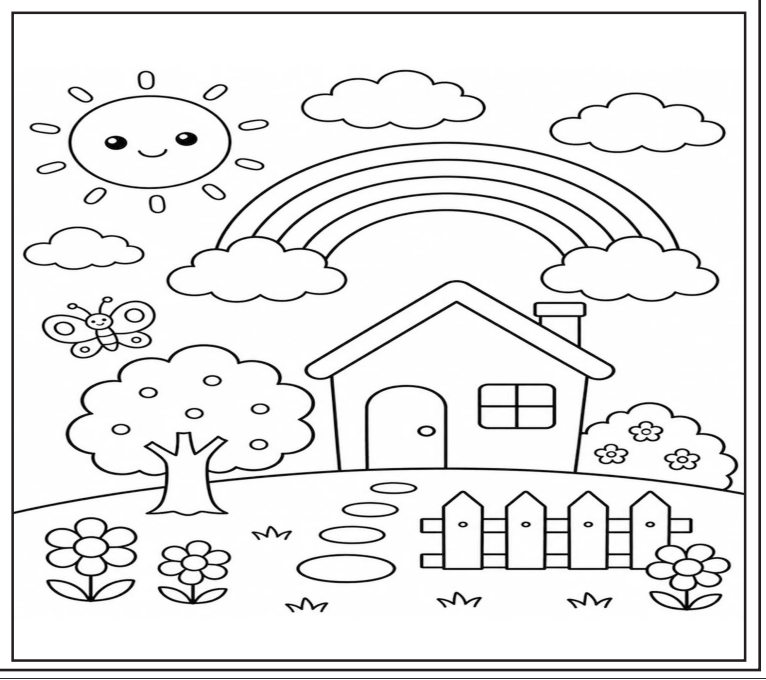

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com पर मेल करें.